vii) पुस्तकालय प्रचार

इन सारी गतिविधियों के लिए अपने क्षेत्र के साहित्यकार, शिक्षक, कर्मचारी तथा व्यवसायियों से सहयोग लिया जा सकता है।

निष्कर्ष

सारांश में कहा जा सकता है कि पुस्तकालय समाज के लिए अपरिहार्य है। ये व्यक्ति को शिक्षित करते हैं तथ सूचनाएं उपलब्ध कराकर उन्हें जागरूक और बेहतर नागरिक बनाते हैं। इस बात में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि दुनिया में विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों में से अधिकांशतः उत्तम पाठक तथा सूचना-संपन्न व्यक्ति होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति , पुस्तकालयों का उपयोग करने वाले , पुस्तकों के प्रेमी और पुस्तकालयों के प्रशंसक होते है। जिस समाज में पुस्तकालय संस्कृति संपन्न होगा उसमें प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक प्रखर होगें। किसी ने सच ही कहा है कि अधिक संख्या में पुस्तकालय खोलकर पुलिस स्टेशनों की संख्या में कमी की जा सकती है।

****

जीवन संध्या

श्रीमती अंजू चौधरी
वरिष्ठ शोध सहायक

धूप में चलता हूँ मैं साया बनकर
दिल में लिए एक ख्वाहिश
मिल जायेगा कोई दरख्त छाया बनकर

खुद जलकर दी औरों को रौशनी
बस इतनी थी आरजू ,
कि रास्ता दिखायेगा कोई शमा बनकर

थक गया जब और लड़खड़ाए कदम,
पाया खुद को अकेला रिश्तों की भीड़ में
जीवन संध्या ने ये मजंर मुझे है दिखाया
दूर हो गये सब अपने, पराये बनकर
धूप में चलता हूँ मैं साया बनकर।
किससे करे शिकवा
और किस-किस बात का
दे गया कोई दर्दे दिल दवा बनकर ।।

****